'पन्त' खुले हैं प्रेम से, उन्नति के सोपान

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

जीवनदाता प्रकृति से, करें नहीं खिलवाड़ ।
सारे स्वारथ सिद्ध हों , सदा उसी की आड़ ।।-1

नदियां बहती थी यहां , लेकर शीतल नीर ।
कलुषित हम ने कर दिया, समझ सके कब पीर ।।-2

कूड़ा करकट गंदगी, फेंकी नदिया तीर ।
जल को दूषित कर चले, फोड़ रहे तकदीर ।।-3

धूल धुएँ से भर रही, शहरों की अब वायु ।
जीना तो मुश्किल हुआ, अल्प हो रही आयु ।।-4

खनन करें पर्वत जमीं, दोहन करते नीर ।
तभी प्रकृति से मिल रही, भूकम्पों की पीर ।।-5

जंगल काटे शहर हित, बिके खेत खलिहान ।
प्रकृति संपदा लूट कर, मानव के मुस्कान ।।-6

प्लास्टिक के उपयोग से, होता है नुकसान ।
पशु पक्षी या मनुज की, मुश्किल होगी जान ।।-7

जन जन में आक्रोश है, समझ न आई भूल ।
रौंदा है जब प्रकृति को, झेल रहे अब शूल ।।-8

स्वच्छ धरा हम दे सकें, सुखी रहे संतान ।
वृक्षारोपण कीजिए, फैले हरित वितान ।।-9

धरा, गगन, जल, वायु ही, जीवन के आधार ।
'पन्त' इन्ही के कोप से, कांप जाय संसार ।।-10

इक दूजे के संग ही, जीना है आसान ।
'पन्त' खुले हैं प्रेम से, उन्नति के सोपान ।।-11

नाम - ज्योतिर्मयी पन्त
जन्मतिथि-17/04/1945
जन्म स्थान -नैनीताल,उत्तराखण्ड
शिक्षा - एम..ए., एम .फिल. संस्कृत
प्रकाशित कृतियाँ :- `ओ माँ `नामक एक संग्रह प्रकाशित ।
कई पत्र -पत्रिकाओं ,ई -पत्रिकाओं में कहानियाँ,कवितायें व लेख प्रकाशित.(हिन्दी और कुमाँउनी)
कविता ,हाइकु,तांका,वर्ण पिरामिड ,दोहा ,गीतिका,मुक्तक संकलनो में सहभागिता ।
हिंदी के प्रथम सामूहिक उपन्यास 'खट्टे मीठे रिश्ते 'में सहभागी .
2010_ 2011 में उद्भव मानव सेवा सम्मान प्राप्त.
शोभना काव्य सृजन सम्मान 2012